

SANSKRIT (UG)**(NEP)****3rd Semester End Examination, 2024****(Regular and Supplementary paper)****PAPER – SEC-3**

Full Marks : 40

Time : 2 hours

The figures in the right-hand margin indicate marks.
Candidates are required to give their answers in their own
words as far as practicable.
Illustrate the answers wherever necessary.

A. यथाकामं पञ्च प्रश्नान् संस्कृतभाषया देवनागरीलिप्या च उत्तरत ।

1. रिक्तस्थानं पुरयत- स्वरव्ययं त्रविष्टपम्॥ 2x5=10
2. रिक्तस्थानं पुरयत- विनायको गजाननाः॥
3. Roman Diacritic- अक्षरैः लिखत- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
4. परिनिष्ठितं रूपं लिखत-
क) हश् + सन् + लट् + ते ख) ज्ञा + सन् + लट् + ते
5. परिनिष्ठितं रूपं लिखत-
क) अधि - इ + णिच् + लट् + ति ख) लिख् + यङ् + लट् + ते
6. णिजन्तात् बुध्-धातोः आत्मनेपदम् उत परस्मैपदं भवति ? तच्च केन सूत्रेण विधीयते ?
7. प्रवहति इत्यत्र केन सूत्रेण परस्मैपदम् ? विरमति इत्यत्र च केन परस्मैपदम् ?
8. कर्तरि कर्मव्यतिहारे इत्यत्र कर्मव्यतिहारशब्दस्य कोऽर्थः ?

B. यथेच्छं चतुरः प्रश्नान् संस्कृतभाषया देवनागरीलिप्या च उत्तरत ।

1. अमरकोषानुसारेण देवतावाचकान् शब्दान् लिखत। 5x4=20
2. अमरकोषानुसारेण शिववाचकान् शब्दान् लिखत।
3. Roman Diacritic- अक्षरैः लिखत-

(2)

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

4. धातुं प्रत्ययं च निर्दिशत- चिकीर्षति, जङ्गम्यते, गमयति, पाठयति, विवक्षति
5. स्था- धাতोरात्मनेपदविधायकानि सूत्राणि विवृणुत।
6. वद्- धাতोरात्मनेपदविधायकानि सूत्राणि विवृणुत।

C. यथेच्छमेकम् उत्तरत।

10

1. लेखसंशोधनं कुरुत।(proof Correction)

पाण्डुलिपि: -

हे ভারত, এই পরানুবাদ, পরানুকরণ, পরমুখাপেক্ষা, এই দাসসুলভ দুর্বলতা, এই ঘণিত জঘন্য নিষ্ঠুরতা- এইমাত্র সমলে তুমি উচ্চাধিকার লাভ করবে? এই লজ্জাকর কাপুরুষতাসহায়ে তুমি বীরভোগ্যা স্বাধীনতা লাভ করবে? হে ভারত, ভুলিও না- তোমার নারীজাতির আদর্শসীতা, সাবিত্রী, দময়ন্তী; ভুলিও না- তোমার উপাস্য উমানাথ সর্বত্যাগী শঙ্কর; ভুলিও না- তোমার বিবাহ, তোমার ধন, তোমার জীবন, ইন্দ্রিয়সুখের- নিজের ব্যক্তিগত সুখের জন্য নহে; ভুলিও না- তুমি জনম হইতেই 'মায়ের' জন্য বলিপ্রদত্ত; ভুলিও না- তোমার সমাজ সে বিরাট মহামায়ার ছায়ামাত্র; ভুলিও না- নীচজাতি, মূর্খ, দরিদ্র, অজ্ঞ, মুচি, মেথর তোমার রক্ত, তোমার ভাই! হে বীর, সাহস অবলম্বন কর; সদপে বল- আমি ভারতবাসী, ভারতবাসী আমার ভাই। বল- মূর্খ ভারতবাসী, দরিদ্র ভারতবাসী, ব্রাহ্মণ ভারতবাসী, চন্ডাল ভারতবাসী, আমার ভাই।

-স্বামী বিবেকানন্দ

(3)

ख. लेख:-

हे भारत, এই পরানুবাদ, পরানুকরণ, পরমুখাপেক্ষা, এই দাসসুলভ দুর্বলতা, এই ঘণিত জঘন্য নিষ্ঠুরতা- এইমাত্র সমলে তুমি উচ্চাধিকার লাভ করবে? এই লজ্জাকর কাপুরুষতাসহায়ে তুমি বীরভোগ্যা স্বাধীনতা লাভ করবে? হে ভারত, ভুলিও না- তোমার নারীজাতির আদর্শসীতা, সাবিত্রী, দময়ন্তী; ভুলিও না- তোমার উপাস্য উমানাথ সর্বত্যাগী শঙ্কর; ভুলিও না- তোমার বিবাহ, তোমার ধন, তোমার জীবন, ইন্দ্রিয়সুখের- নিজের ব্যক্তিগত সুখের জন্য নহে; ভুলিও না- তুমি জনম হইতেই 'মায়ের' জন্য বলিপ্রদত্ত; ভুলিও না- তোমার সমাজবিরাট মহামায়ার ছায়ামাত্র; ভুলিও না- নীচজাতি, মূর্খ, দরিদ্র, অজ্ঞ, মুচি, মেথর তোমার রক্ত, তোমার ভাই! হে বীর, সাহস অবলম্বন কর; সদপে বল- আমি ভারতবাসী, ভারতবাসী আমার ভাই। বল- মূর্খ ভারতবাসী, দরিদ্র ভারতবাসী, ব্রাহ্মণ ভারতবাসী, চন্ডাল ভারতবাসী, আমার ভাই।

-স্বামী বিবেকানন্দ

2. Roman Diacritic- অক্ষরৈ: লিখত-

लोकेऽस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ।

ज्ञानयोगेन सांख्यानं कर्मयोगेन योगिनाम्॥

न कर्मणामनारम्भान्नैकं कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।

न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति॥

न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः॥

कर्मोन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।

इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते॥